18 थैंक्यू निकुँभ सर

कहानियाँ हमेशा बड़े लोगों की सुनाई जाती हैं, लेकिन यहाँ तुम्हें एक बच्चे और उसके सच्चे गुरु की कहानी पढ़ने को मिलेगी। 'तारे ज़मीन पर' फ़िल्म की पटकथा बनी यह कहानी है ऐसे गुरु की जिन्होंने अपने शिष्य के भीतर घुटकर दम तोड़ रही प्रतिभा को एक सही रास्ता दिखाया, जिस प्रतिभा को इससे पहले कोई पहचान तक नहीं पाया था।

पहले आपको बच्चे से मिलवाऊँ। तो ये हैं—ईशान अवस्थी। दस साल के हो गए हैं लेकिन दो साल से तीसरी कक्षा में ही पढ़ रहे हैं। इन्हें अगर आनंद आता है तो रंगों, मछलियों, पतंगों और अपने पालतू कुत्ते की संगत में। क्लास में क्या पढ़ाया जा रहा है, इनकी समझ में नहीं आता था। कुछ पढ़ने की कोशिश में सारे अक्षर आँखों के सामने डाँस करने लगते थे। होमवर्क से इन्हें चिढ़ थी, रिपोर्ट कार्ड इनके लिए कागज़ का टुकड़ाभर था जिसका इस्तेमाल इनके डॉगी ज़्यादा अच्छी तरह से कर सकते थे, उसे चिंदी-चिंदी करके।

टैस्ट में सवाल था तीन गुणा नौ कितने? सामने आ गए सौरमंडल के नौ ग्रह। ईशान का रॉकेट नंबर तीन के ग्रह धरती को नंबर नौ के ग्रह केतु के पास ले गया। दोनों में टक्कर हुई और नौ हो गया चूर-चूर। बचा क्या—तीन। यानी जवाब हुआ तीन। लिख दिया आंसर शीट पर। ईशान का तरीका तो यही था।

पहले पीरियड में क्लास से बाहर कर दिए गए तो दूसरे पीरियड में इसलिए बंक कर गए कि मैथ्स का होमवर्क तो किया ही नहीं था। निकल गए अकेले सड़क पर। रात को याद आया तो बड़े भैया योहान को जगाकर उनसे एब्सेंट नोट तैयार कराने के लिए खुशामद की। पापा को पता चला तो डाँट पड़ी।

अगले दिन पापा स्कूल में टीचर्स से मिले तो और बहुत-सी बातों का पता चला। तय हुआ कि ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया जाए क्योंकि बोर्डिंग स्कूलवाले ठोक-पीटकर ठीक कर देते हैं।

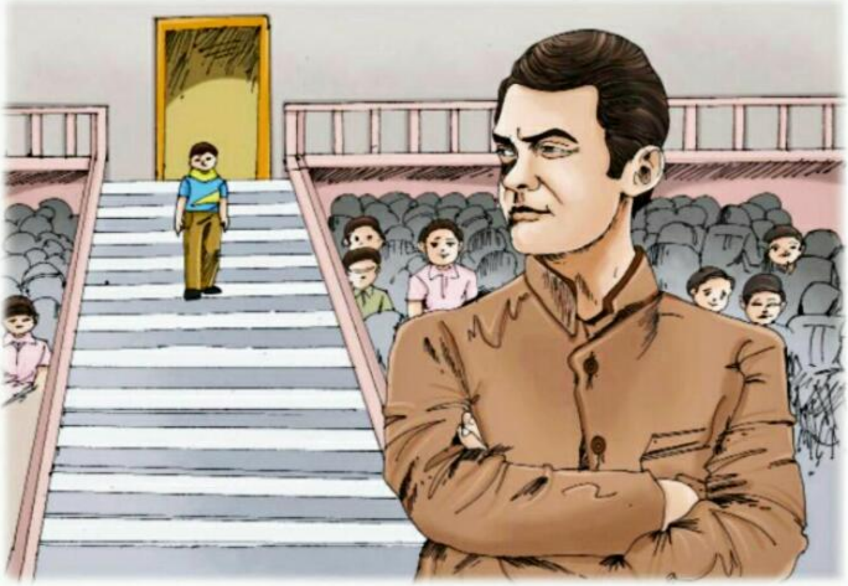

ईशान चिल्लाता रह गया कि वह बोर्डिंग स्कूल नहीं जाएगा, माँ से दूर नहीं जाएगा, लेकिन पिता नहीं माने।

Copyrighted mater

वहाँ से पिता को आश्वासन मिला कि यहाँ तो बड़े-बड़े बिगड़ैल घोड़ों को नाल पहनाई है हमने। और था भी कुछ ऐसा ही। हर टीचर डपटते कुछ इस तरह कि वह डाँट कम और अपमान ज़्यादा होता। ड्रॉइंग टीचर तो पिटाई करने से भी नहीं चूके। बात करने के लिए था तो साथ बैठनेवाला लड़का राजन दामोदरन जो बैसाखियों के सहारे चलता था।

परिवार से दूरी और हर बात पर अपमान ने ईशान को तोड़कर रख दिया। वह अपने में ही सिमटकर रह गया। ज़बान जैसे मुँह के अंदर बंद होकर रह गई। लेकिन किसी को इसकी परवाह नहीं थी। माँ का फ़ोन आया तब भी यह ज़बान बंद ही रही। वह बता रही थीं कि इस शनिवार को मिलने नहीं आ पाएँगे क्योंकि भाई योहान का टेनिस मैच था। माँ बात करती जा रही थीं और ईशान फ़ोन नीचे रखकर चला गया था। सिर झुकाए, चुपचाप।

एक दिन एक नए ड्रॉइंग टीचर आए। राम शंकर निकुँभ। वही गुरु जिनका ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है। आए भी तो एक तूफ़ान की तरह। नियम, कायदे, अनुशासन को तोड़ने के संदेश के साथ। जो मन में है, जो आपकी कल्पना में है, उसे कागज़ पर उतारो।

हर बच्चा अपने मन से चित्र बना रहा था। पूरे क्लासरूम में जैसे रंगों का एक कार्निवॉल-सा सज रहा हो। लेकिन कागज़ की एक शीट अब भी कोरी थी। निकुँभ सर की नज़र इस कार्निवॉल पर से घूम-घूमकर उस सफ़ेद शीट की ओर जाती। इस उम्मीद के साथ जाती कि वहाँ रंगों ने अपना खेल शुरू कर दिया होगा। लेकिन शीट तो कोरी ही मिलती। उस चुप्पे-से बच्चे से बात करने की कोशिश की, लेकिन ज़बान तो क्या, उसकी उदास आँखें भी कुछ बोलने से इनकार कर रही थीं।

उसके बारे में जानने के लिए ईशान की दूसरे विषयों के होमवर्क की कॉपियाँ देखीं। कुछ और अधिक जानने के लिए मुंबई उसके घर चले गए। ईशान की चीज़ें देखीं तो पता चला कि उस चुप्पे-से बच्चे के भीतर तो रंगों का एक जादूगर छिपा बैठा है। कल्पनाशीलता की जो उड़ान यहाँ है, वह किसी आम बच्चे में तो नहीं होती। नासमझी एक इतनी बड़ी प्रतिभा को बरबाद कर रही है। तय किया कि ऐसा नहीं होने देंगे।

पहले तो पिता को डाँट पिलाई। बताया कि डिसलेक्सिया नाम की एक बीमारी होती है, जिसमें बच्चे को शब्दों और अंकों की जटिल प्रक्रिया को समझने में दिक्कत होती है।

जो चीज़ें आम बच्चे को आसानी से समझ में आ सकती हैं, उन्हें समझाने के

लिए उसपर अतिरिक्त मेहनत की जाने की ज़रूरत है। लेकिन उसकी उस एक अक्षमता को लेकर कोसते रहने से एक कलाकार के रूप में उसकी प्रतिभा को बरबाद किया जा रहा है।

स्कूल में प्रिंसिपल को भी समझाया कि एक होनहार बच्चे को नालायक मानकर कोसा जा रहा है और नष्ट किया जा रहा है। उसे डाँट की नहीं, समझे जाने की ज़रूरत है, सहानुभूति की ज़रूरत है।

वह अपने काम पर लग गए। उस चुप्पे बच्चे की पहले तो ज़बान लौटाई, फिर उसकी कल्पनाशक्ति और कुछ कर दिखाने की इच्छा। दूसरे विषयों पर भी वे उसके साथ मेहनत करते रहे।

और फिर एक दिन निकुँभ सर ने एक अनोखा ऐलान किया। स्कूल में एक ड्रॉइंग कंपिटीशन का। इसमें सब हिस्सा लेंगे, बच्चे भी और टीचर भी।

नियत दिन पर कंपिटीशन शुरू हुआ। सब आए लेकिन ईशान का कहीं पता ही नहीं था। समय हो गया था। राजन से पूछा तो पता चला कि वह तो सुबह ही उठकर कहीं चला गया था।

वह गया था झील के किनारे, उसके पूरे वातावरण को सुबह की आभा में अपने भीतर समेटने।

एक घंटा बीत गया था। निकुँभ सर निराश हो गए थे लेकिन तभी वह दिखाई दिया। और बिना कुछ बात किए काम पर लग गया।

निर्णय के लिए आई थीं प्रख्यात चित्रकार ललिता लाज़मी। प्रिंसिपल साहब ने निर्णय की घोषणा की कि दो चित्रों के बीच 'टाई' है। जीतना तो एक को ही था इसलिए गुरु—निकुँभ सर पीछे रह गए और जीत गया शिष्य—ईशान। तालियों का शोर हो रहा था लेकिन ईशान अपने में सिमटा बच्चों के पीछे दुबका जा रहा था।

स्कूल की एनुअल रिपोर्ट छपी तो उसके पहले आवरण पर छपी थी—ईशान की पेंटिंग और पीछे के पृष्ठ पर निकुँभ सर की पेंटिंग। ईशान का चेहरा रंगों के अंतरिक्ष के बीच में। खुशी से खिला हुआ।

ईशान को यह खुशी देने के लिए धन्यवाद निकुँभ सर।

फ़िल्म की कथा का पुनर्लेखन

सुरेश उनियाल

Copyrighted material

पाठ मूल्यांकन

अभ्यास

शब्दार्थ

चिंदी-चिंदी - टुकड़े-टुकड़े; **सौरमंडल** - सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों, उपग्रहों का समूह;
नौ ग्रह - सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु;
एब्सेंट नोट - अनुपस्थिति पत्र; **खुशामद** - चापलूसी; **बिगड़ैल** - बिगड़े हुए;
परवाह - चिंता, फ़िक्र; **कार्निवॉल** - उत्सव; **जटिल** - कठिन, पेचीदा

पाठ-बोध

मौखिक

प्रत्येक 1 अंक

1. ईशान को क्या-क्या करने में मज़ा आता था?
2. ईशान को क्लास में पढ़ा हुआ समझ क्यों नहीं आता था?
3. ईशान के लिए रिपोर्ट कार्ड का क्या महत्त्व था?
4. एब्सेंट नोट क्यों तैयार करवाना पड़ा?
5. स्कूल ने ईशान की पेंटिंग को कैसे सम्मानित किया?

लिखित

लघुउत्तरीय प्रश्न Short Answer Questions

प्रत्येक 1 अंक

ईशान फ़ोन नीचे रखकर चला गया था। सिर झुकाए चुपचाप।

क. किसका फ़ोन आया था? ....

ख. फ़ोन पर क्या बताया जा रहा था? ....

उचित विकल्प पर ✓ का निशान लगाएँ—

प्रत्येक ½ या 1 अंक

1. **यहाँ तो बड़े-बड़े बिगड़ैल घोड़ों को नाल पहनाई है हमने।**

   क. 'यहाँ तो' से क्या मतलब है?

   i. घर ☐ ii. बोर्डिंग स्कूल ☐ iii. छात्रावास ☐ iv. कक्षा-कक्ष ☐

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **Oral Expression** • short answer questions, comprehension, reasoning, drawing inference • **जीवन-मूल्य** - संवेदनशीलता, दृढ़निश्चय, अनुशासनबद्धता, लक्ष्य-निर्धारण, गुरु-शिष्य संबंध

ख. 'बिगड़ैल घोड़ों' से किनकी ओर संकेत है ?

i. बिगड़े हुए घोड़े	☐	ii. सामान्य घोड़े	☐
iii. शरारती बच्चे	☐	iv. डिसलेक्सिक छात्र	☐

2. और फिर एक दिन निकुँभ सर ने एक अनोखा ऐलान किया।

क. क्या ऐलान किया ?

i. घूमने जाने का	☐	ii. ड्रॉइंग कंपिटीशन का	☐
iii. पढ़ने का	☐	iv. खेलने का	☐

ख. वह किनके लिए था ?

i. सिर्फ़ बच्चों के लिए	☐	ii. सिर्फ़ अध्यापकों के लिए	☐
iii. छात्र-अध्यापक, दोनों के लिए	☐	iv. छात्र-अध्यापक, अभिभावकों के लिए	☐

ग. इसका क्या लाभ हुआ ?

i. सब खुश हो गए	☐	ii. सबकी कला निखरी	☐
iii. ईशान की कला निखरी	☐	iv. निकुँभ सर की कला निखरी	☐

दीर्घउत्तरीय प्रश्न Long Answer Questions

प्रत्येक 3 अंक

1. ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेजने के पीछे क्या कारण था ?
2. ईशान का मन बोर्डिंग स्कूल में क्यों नहीं लगा ?
3. निकुँभ सर ने कक्षा में आते ही क्या-क्या कहा ?
4. निकुँभ सर को ईशान की प्रतिभा का कैसे पता चला ?
5. निकुँभ सर ने ईशान के पिता को डिसलेक्सिया के बारे में क्या बताया ?
6. **ऐसा क्यों कहा गया ?** *प्रत्येक 2 अंक*

क. यानी जवाब हुआ तीन। लिख दिया आंसर शीट पर। ईशान का तरीका तो यही था।

ख. जो मन में है, जो आपकी कल्पना में है, उसे कागज़ पर उतारो।

7. छात्र को आगे बढ़ाने में अध्यापकों का क्या योगदान होता है ? अपने विचार लिखिए। M.I. *4 अंक*

व्याकरण-बोध

1. रेखांकित शब्द बहुवचन में बदलकर वाक्य लिखिए— *प्रत्येक 1 अंक*

- इस <u>बाज़ार</u> में कुछ न मिलेगा। ....इन बाज़ारों में कुछ न मिलेगा।........

क. <u>गायिका</u> ने गीत गाया। ....

Skills/Learning: • **Comprehension** – Long answer questions, cause-effect, differentiating, logical thinking, describing, reasoning, M.I. • **Language** – number, reframing sentences

Copyrighted material

ख. घर से बाहर निकलो। ....

ग. डाकू सरपट भागा। ....

घ. सबीना ने पुस्तक खरीदी। ....

ङ. सच्चा मित्र मुसीबत से बचाता है। ....

च. दादी ने कहानी सुनाई। ....

छ. चिड़िया दूर तक उड़ती है। ....

2. **जब दो सरल वाक्य— और, तथा, अथवा, किंतु, परंतु आदि योजक से जोड़े जाते हैं तो वह संयुक्त वाक्य कहलाता है। उदाहरण देखकर संयुक्त वाक्य बनाइए—** *प्रत्येक 1 अंक*

कथन : सभा समाप्त हुई। सब चले गए। (**दो सरल वाक्य**)

उत्तर : सभा समाप्त हुई और/इसलिए सब चले गए। (**संयुक्त वाक्य**)

क. युवराज ने गेंद उछाली। छक्का पड़ गया।

....

ख. मेरे पास अरबी घोड़ा है। वह तेज़ भागता है।

....

ग. राष्ट्रगान शुरू हुआ। सब खड़े हो गए।

....

घ. वह अपराधी था। उसे सज़ा हुई।

....

ङ. अंशुल सवेरे कॉलेज जाता है। शाम को नौकरी करता है।

....

3. हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो अर्थ की दृष्टि से देखने में एक जैसे लगते हैं परंतु हर जगह उनका प्रयोग नहीं किया जा सकता। जैसे—**पाप** और **अपराध** का अर्थ एक जैसा लग सकता है परंतु ऐसा है नहीं।

कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर वाक्य पूरे कीजिए— *प्रत्येक ½ अंक*

क. मेरा .... है कि इस बार किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिलेगा।

(**पंथ, धर्म, मत, संप्रदाय**)

Skills/Learning: • **Language** – reframing sentences, sentence formation, identification

Copyrighted material

ख. ईश्वर ने जितना दिया है उतने में ही .... करो।

(संतोष, तृप्ति, संतुष्टि, आत्मसंतोष)

ग. मेरा .... पायलट बनना है और मैं बनकर रहूँगा।

(लक्ष्य, लक्ष, लाख, लखन)

घ. मेरी प्रकाश से .... हो गई है। **(खटपट, अनबन, चिड़चिड़, युद्ध)**

ङ. प्रो. शर्मा जब घर आए तो पत्नी ने उनका .... किया।

(अभिनंदन, स्वागत, सत्कार, मान)

च. मेरे लिए इतना ही .... है कि मेरे बुलाने पर तुम चले आए।

(ज़्यादा, अधिक, मत, बहुत)

छ. पार्टी में रीमा की लगातार .... की गई। **(अपेक्षा, उपेक्षा, अपमान, बेइज़्ज़त)**

ज. पिता जी ने बेटे की .... पर कोई ध्यान न दिया।

(प्रार्थना, अनुरोध, आज्ञा, ज़िद)

झ. कर्ण ने अर्जुन पर एक .... छोड़ा जो उसे नहीं लग पाया।

(अस्त्र, शस्त्र, गोला, तीर)

विषय संवर्धन गतिविधियाँ
Subject Enrichment Activities

1. फ़िल्मों को समाज और समय सापेक्ष भी होना चाहिए। **चर्चा कीजिए।** *(मौखिक अभिव्यक्ति)* **ASL**
2. **थ्री इडियट्स, पाठशाला, तारे ज़मीन पर, इकबाल, ब्लैक, दोस्ती** (राजश्री) **फ़िल्में देखिए।** (youtube.com)
3. यदि ईशान को बोर्डिंग स्कूल न भेजा जाता और वहाँ निकुँभ सर न आते तो क्या होता?

....

....

....

....

....

Skills/Learning: • Language – words with various meaning, sorting out
• S.E.A. – Creative Expression – imagination, thinking, discussion, watching film, ICT